Impact Factor-8.575 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January-2023

(CCCLXXXIII) 383-A

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्म और पत्रकारिता का योगदान

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. M.N. Kolpuke
Principal
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

Editor
Dr. Govind G. Shivshette
Department of Hindi,
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

Impact Factor – 8.575
ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January -2023

ISSUE No - (CCCLXXXIII) 383 -A

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्म और पत्रकारिता का योगदान

Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr. M.N. Kolpuke
Principal,
Executive-Editors
Maharashtra Mahavidyalaya, Nilanga Dist. Latur

Dr. Govind G. Shivshette
Editors
Department of Hindi Maharashtra Mahavidyalaya, Nilanga

Aadhar International Publication
For Details Visit To : www.aadharsocial.com
© All rights reserved with the authors & publisher

INDEX-A

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी साहित्य	डॉ आरती बंसल	1
2	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता	डॉ. अनिला मिश्रा	4
3	स्वतंत्रता आन्दोलन : नवजागरण में हिंदी साहित्य का प्रखर राष्ट्रवाद	डॉ. बोबडे जयंत ज्ञानोबा	8
4	स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी फिल्म	प्रा.डॉ. पल्लवी भूदेव पाटील	14
5	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी नाटक	डॉ. बन्सीलाल हेमलाल गाडीलोहार	16
6	स्वाधीनता आंदोलन मे हिंदी कवियों की भूमिका	प्रा.डॉ. अमोल रमेश इंगले	21
7	भारतीय हिंदी फिल्मी गीतों में व्यक्त राष्ट्रीय भावना	डॉ.शिवसर्जन होनाजी टाले	24
8	स्वतंत्रता संग्राम में सुभद्रा कुमारी चौहान का योगदान	प्रा. डॉ. मुल्ला मुस्तफा लायक	27
9	रेणु और मैला आँचल : स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में	डॉ. सिन्धु सुमन	31
10	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी फिल्म	डॉ.रेशमा गणेश लोंढे	35
11	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य	डॉ. अभिमन्यु नरसिंगराव पाटील	39
12	आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय चेतना	डॉ.कल्याण शिवाजीराव पाटील	43
13	रामधारी सिंह दिनकर के साहित्य मे राष्ट्रीय चेतना	प्रा. डॉ. दत्तात्रय लक्ष्मण येडले	47
14	स्वाधीनता आंदोलन और नवजागरण काल	डॉ. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे	51
15	राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत स्वाधीनता कालीन हिंदी काव्य	डॉ.विजय कुमार कुलकर्णी	54
16	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी फिल्मों का योगदान	प्रा.डॉ.मधुकर राऊत	57
17	आजादी के आंदोलन में : पत्रिकओंका योगदान	डॉ.जे.ए.चौधरी	60
18	हिंदी उपन्यासों में राष्ट्रवाद	प्रा.संतोष शिवराज पवार	63
19	स्वाधीनता संग्राम और हिंदी पत्रकारिता	डॉ.बबन रंभाजीराव बोडके	66
20	स्वाधीनता आंदोलन और दलित नवजागरण	डॉ. रामेश्वर वरशिळ	69

B.Aadhar' Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal
Impact Factor -(SJIF) –8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- A
ISSN : 2278-
January 2023

स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी फिल्म

प्रा.डॉ. पल्लवी भूदेव पाटील
एम. ए. एम. फिल. नेट,
पी.एच.डी. हिंदी विभागाध्यक्ष, राजर्षी शाहू महाविद्यालय (स्वायत्त), लातूर

फिल्म एक सशक्तदृश्य श्रव्य माध्यम है । दृश्य-श्राव्य होने केकारणफिल्म अपना असरकरती है । यह माध्यमदृश्य-श्रव्य होने केकारण अनपढ व्यक्ती भी इसे समझ सकता है । फिल्म एक पटकथा, चरित्र-चित्रण, संवाद, अभिनय, भाषा-शैलीऐसाएक भरा-पूरा पनकेवलफिल्मों में हो सकता है । नृत्य, नाटकनेविगत वर्षों मेंएक अभिजात्यगुणवत्ता एवं भावनाको हासिल किया । १९१३ में बनी पहली फिल्म राज हरिश्चंद्र से यह सफर शुरु होता है और सौ सालोंके पश्चात भी यह सफरजारी है । १९२० में पहली बारकुलकत्ता मद्रास में सेंसर बोर्ड स्थापितकिए गए । फिल्म सम्मोहन के साथ-साथ आंदोलनकीक्षमता भी रखती है । चमक, गति, यथार्थवादइनगुणोंकेचलतेफिल्में विशेष बनती है । विजय शर्मा कहते है - "फिल्म साहित्य संभिन्न मुहावरें में बातकरती है ।"[१] फिल्म को सशक्त माध्यमइसलिए भी कहा गया है, क्योंकि आलोक पाण्डेय की परिभाषा उस दृष्टी से लिखी गई है - "दरअसल सिनेमासिर्फ अभिव्यक्ती नहीं है, वह एक अन्वेषणकारी माध्यम भी है, वह बहुत कुछऐसा भी कहता औरकरता है । जिसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता ।"[२] वही कैलास पाण्डेय के लिए "जीवनकी हर झाँकी और मंजरको रुपायितकरनेवालासिनेमा यह सबसे सुंदर सांस्कृतिक उपहरा है ।"[३] इस आधार पर हम कह सकते है हिंदी फिल्मेंकेवल हमारे जीवन बल्कि समाज, राष्ट्रकी संवेदनाओंकी अभिव्यक्तिकरनेके लिए सक्षम है क्योंकि, फिल्म एक प्रभावी माध्यम होने केकारण स्वतंत्रता आंदोलनफिल्मकारोंने अपनी पटकथाका विषय बनाया है । फिल्मों में अनेक विषयों परफिल्में बनी है । फिल्मकारोंने स्वतंत्रता संग्राम परकई फिल्में बनाई है । १९६५ में बनीफिल्म शहीद जिसे मानोजकुमारने बनायाथाइस फिल्म में शहीद भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरुके रचितगीतोंकोचुना गया है । मनोजकुमारकीफिल्म यह स्वतंत्रता संग्राम की प्रमाणिकफिल्म मानीजाती है । १८७६ में लॉर्ड नॉर्थब्रुक प्रशासनने मंच से राजद्रोह दृश्य खत्मकरनेके लिए नाटक प्रदर्शन अधिनियम लागु कियाथा । उस समय ब्रिटीश सरकार सेंसर बोर्ड परनजर बनाए हुए थाकिफिल्म मेंदेशभक्तिकी भावनाकोनदिखाया जाए । रामचंद्रनारायणतथाकवि प्रदिप केखिलाफगिरफ्तारीका वॉरंट निकाला गया था १९४३ कीफिल्म 'किस्मत' में भारतछोडो से संबंधितएकगानाथा "आज हिमालय कीचोटी सेफिर हमने ललकारा है दूर हटोऐदुनियावालों हिंदुस्तान हमारा है ।" शुरु हुआ जंग तुम्हारा जाग उठो हिंदुस्तानी तुनकिसीके आगेझुकनाजर्मन हो या जापानी हो ।" दुसरे महायुद्ध (१९३९ से १९४५ तक) में भारत मित्रराष्ट्रोंकी ओर सेथा उस समय जर्मनी और जापान शत्रुथे । १९४२ में बर्मा को हराने के बाद जापानके आक्रमणकीचिंता भारतको परेशानकरने लगी थी । और वह ब्रिटीश सरकारकेविरोध मेंकिया गया था अतः ब्रिटीश सरकार से बचनेके लिए कवि प्रदिप को भूमिगत होना पडाथा । १५ अगस्त १९४७ दरम्यान आजादी परफिल्म नहीं बनी । रमेश सहगल केनिर्देशन मेंनो बनी वह 'शहीद' बनी ।

कमरजलालबादीद्वारा लिखा - "वतनकी राह में वतनकेनोजवौ शहीद हो ।" यह चर्चित रहा । १९५० में रमेश सहगल नेनेताजी सुभाष चंद्र बोसतथा उनकी आजाद हिंद सेना परएक सच्ची घटनाओंकीएकफिल्म बनाई थी 'समाधी' आजाद हिंद फौज पर विमल रायकीएक औरफिल्म आयी थी 'पहला आदमी' हेमेन गुप्ता वे स्वयं स्वतंत्र सेनानीथे, कई बारजेल भी जाकर आए थे उन्होंने १९५२ में बंकिमचंद्रके उपन्यास पर आनंदमठनामकफिल्म बनाई थी लेकिन वह उतनी चही नहीं थी १९५३ में शेहराब मोदीने झाँसी की रानी परफिल्म बनाई थी । १९४० से १९५० कादौर सामाजिक, रौमांटिक, संगीतप्रधानएक्शन, सस्पेंस आदिफिल्मोंकादौर होने के बावजूद १९५३ में ख्वाजा अहमद आब्बास ने 'राही' फिल्म बनाई जिसमेंएक चाय का अंग्रेजी मालिक भारतीय मजदूरोंका शोषण कैसेकरता है यह बताया गया है । १९५७ में बनी महबूब खानकी मदरइंडिया में उन्होंने सीधे-सीधे स्वतंत्रता संग्राम को नहीं बताया मगर सामाजिक समस्याओंको उजागरकिया है । १९६० मेंगोवा मुक्ति युद्ध १९६२ मेंचीनी आक्रमण, १९६१ में पाकिस्तान आक्रमण, १९७१ में भारत-पाकिस्तान युद्ध हुआ इस युद्धों परतथा शहिदों के बलिदान परकुछफिल्में बनी १९६४ में हकीकत, १९६८ में हमसाया, १९७२ में ललकार १९७३ में हिंदुस्तान कीकसम, १९७५ मेंकसम यह कुछ बेमिसालफिल्में बनीजिनमें राष्ट्रभक्तिकी भावनाओंको प्रमुख स्थानदिया गया है । १९७० कीदशक में बनी पुरब और पश्चिम इस फिल्म कानाम लेनागलतन होगा क्योंकिइन्हीं फिल्मोंद्वारा भारतीयफिल्मो में भारतीय संस्कृतिके सौंदर्यकोदिखाया गया है । १९९१ में प्रहार तथा १९९७ में बॉर्डर जैसीफिल्में भारतीय फौजकेजीवन पर बडी

ही संवेदनशिलताको उजागरकरती हुए राष्ट्रभावनाकोजगाती है । २००१ की लगान, २००७ कीचकदेइंडिया, २०१३ की भाग मिल्खा भाग इनफिल्मों मेंक्रिकेट, हॉकी तथादौड इनखेलोंद्वारा राष्ट्रभक्तिको उजागरकिया है । २००३ में राजकुमार संतोषी की 'द लेजेंट ऑफ भगतसिंह' २००४ की श्याम बेनगलद्वारा बनीनेताजी सुभाषचंद्र बोस : द फॉर्गाटन हिरो तथा २०१८ उरी, तक यह देखनेकोमिलेगाकि ११० साल फिल्म जगतने पूरेकिए है और लगभग हर दशक में राष्ट्रभक्तिकीफिल्में आयी है । १९८२ मेंरिचर्ड एटनबरोंकीफिल्म गांधी मेंकिस प्रकारका स्वतंत्रता संग्राम बताया है वैसा आज तक नहीं बताया है । उस फिल्म मेंगांधीकी अहिंसात्मक नीतियों पर अधिक बल दिया गया है । भारतकी मुल्यवान अस्मिता से संस्कार रखने औरसिनेमा मेंऐसे पक्षोंका पुरजोर प्रबल स्थापत्य रचनेवालेफिल्मकारों में सोहराब मोदी, रमेश सहगल, व्ही शांताराम, मेहबुब खान, निर्देशक और अभिनेताओंअमरकृतित्वकाकृतज्ञ होना चाहिए क्योंकि जब-जब हम प्रतिबद्धता और संस्कारकी बातकरेंगेतोऐसीफिल्में औरफिल्मकार सशक्त प्रमाणके साथ हमारे सामने आते है देशकिस प्रकार गुलामी केगर्त मेंथाइसें प्रेमचंदने शतरंजकेखिलाडीइस कहानी में बताया है लेकिन सत्यजीत रेइस रचना परएक सशक्तफिल्म बनाई है इस कारण वह आम-जन-जिवनतक पहुँच गई है ।

संदर्भग्रंथ -

१) हिंदी सिनेमाकाइतिहास - मनमोहन चड्ढा - पृ. १३
२) हिंद सिनेमाएन्सायक्लोपीडीया - श्रीरामताम्रकर - पृ. १८ - पृ १९
३) हिंदी सिनेमाकाइतिहास - मनमोहन चड्ढा पृ. ७४